

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण शुक्रवार 30 अक्टूबर 2026 वर्ष-9,अंक-269 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com



www.facebook.com/krantisamay1



www.twitter.com/krantisamay1

यूपी में त्यवस्था परिवर्तन के लिए हिंसा पड़ेगी भारी!

सरकार ने बनाया नया नियम,नौकरी पर छाएगा संकट



लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में व्यवस्था बदलने के लिए युवा अगर सड़क पर उतरकर हिंसा करते हैं तो उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। राज्य सरकार ने अलग-अलग विभागों, परिषदों, निगमों और स्थानीय निकायों में सीधी भर्ती से चुने जाने वाले कैडेटेट्स के चरित्र प्रमाण पत्र से जुड़े नियमों में यह बदलाव किया है। यूपी में नियुक्ति एवं कार्मिक विभाग के अपर मुख्य सचिव एम. देवराज ने हाईकोर्ट के आदेश के बाद नए नियम जारी किए हैं। इसके मुताबिक, अगर कोई व्यक्ति ऐसे संगठन का सदस्य है, जिसका मकसद हिंसा के जरिए समाज की व्यवस्था बदलना है, तो उसे सरकारी नौकरी के लिए अयोग्य माना जाएगा।

21 सालकी उम्र के बाद की गतिविधियां नोट की जाएंगी

नए नियमों में उम्र और समय से जुड़ी शर्त भी रखी गई है। 21 साल की उम्र पूरी करने के बाद किसी व्यक्ति की ऐसी गतिविधियों को देखा जाएगा। संबंधित मामले की जांच की तारीख से तीन साल के भीतर अगर वह व्यवस्था परिवर्तन से जुड़े प्रदर्शनों में शामिल पाया जाता है, तो माना जाएगा कि वह अब भी ऐसी गतिविधियों में शामिल है। हालांकि, इस दौरान व्यक्ति की सोच और व्यवहार में अच्छा बदलाव दिखाई देता है, तो उसे सरकारी नौकरी देने पर विचार किया जा सकेगा। यानी ऐसे मामलों में व्यक्ति के व्यवहार और उसमें आए बदलाव को भी ध्यान में रखा जाएगा।

संक्षिप्त

समाचार

आरएसएस में पहली बार बनेंगी राज्य इकाइयां

11 क्षेत्र घटकर अब 9 होंगे, 46

प्रांतों से 90 संभाग बनेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने संगठनात्मक ढांचे में बड़े बदलाव की तैयारी कर रहा है। प्रस्तावित बदलावों में क्षेत्र घटाना और नए संभाग बनाना शामिल है। सूत्रों के मुताबिक, आरएसएस के 11 क्षेत्र घटकर 9 किए जाएंगे। मौजूदा 46 प्रांतों की जगह करीब 90 संभाग बनाए जाएंगे। संघ पहली बार राज्य स्तर पर संगठनात्मक इकाइयां परिरागा। इनमें केवल राज्य प्रचारक और राज्य कार्यवाह होंगे। इस व्यवस्था में



राज्य संघवालक का पद नहीं होगा। संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की वार्षिक बैठक 2 से 4 नवंबर तक मध्यप्रदेश के इंदौर में होगी। तीन दिन की बैठक में संगठन के पुनर्गठन, शताब्दी वर्ष की गतिविधियों और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा होगी।

संगठन में विकेद्रीकरण की तैयारी

प्रस्तावित बदलावों का मकसद संघ के कामकाज को विकेद्रीकृत करना है। इसके तहत जिम्मेदारियां ज्यादा प्रभावी ढंग से बांटी जाएंगी और अलग-अलग स्तरों पर तालमेल बेहतर किया जाएगा। अधिक संख्या में संभाग बनने से संगठनात्मक गतिविधियों का प्रबंधन आसान होने की उम्मीद है।

आजम को जमानत, लेकिन बाहर आना होगा मुश्किल

बेटा जेल से छूटेगा, 2 पैन कार्ड

मामले में 10 साल की सजा सस्पेंड

लखनऊ (एजेंसी)। सपा नेता आजम खान और उनके बेटे अब्दुल्ला की 10 साल की सजा को हाईकोर्ट ने सस्पेंड कर दिया। दोनों को जमानत भी दे दी। गुरुवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने डबल पैन कार्ड मामले में यह फैसला सुनाया है। हालांकि, कोर्ट ने दोषी ठहराया था।



इनकार कर दिया है। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद अब्दुल्ला के जेल से बाहर निकलने का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि, आजम अभी जेल से बाहर आयेगे या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है। वजह आजम के खिलाफ अभी दो पेंडिंग केस हैं। आजम के खिलाफ एक मामला ईडी ने हाल ही में दर्ज किया है। जबकि एक मामला 10 सितंबर का है, जिसमें यूपी विजिलेंस ने आजम के खिलाफ केस दर्ज किया था। अगर इन मामलों में पुलिस वारंट-बी नहीं लेती है तो आजम जेल से बाहर आ सकते हैं। आजम को बेटे अब्दुल्ला के डबल पैन कार्ड मामले में रामपुर की कोर्ट ने दोषी ठहराया था।

घेराबंदी तोड़ो, आगे बढ़ो! पटना की सड़कों पर ‘आक्रोश’

फूटा दारोगा अभ्यर्थियों का गुस्सा, पुलिस बैरिकेडिंग तहस-नहस

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में दारोगा भर्ती के अभ्यर्थियों का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा। 1799 पदों के लिए आयोजित दारोगा मुख्य परीक्षा को रद्द किए जाने के निर्णय से नाराज सैकड़ों अभ्यर्थी मुख्यमंत्री आवास (लोक सेवक आवास) का घेराव करने के मकसद से सड़कों पर उतर आए। पुलिस की ओर से गांधी मैदान और जेपी गोलंबर पर की गई सख्त घेराबंदी और बैरिकेडिंग को तोड़ते हुए उग्र अभ्यर्थी डाकबंगला चौराहे की ओर बढ़ गए। अभ्यर्थियों का आरोप है



कि पिछले एक महीने से शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने के बाद भी शासन-प्रशासन की ओर से उनकी मांगों की लगातार अनदेखी की गई, जिससे उन्हें

यह कड़ा रुख अपनाने पर मजबूर होना पड़ा। प्रदर्शन की शुरुआत गुरुवार सुबह गांधी मैदान के गेट नंबर-10 से हुई। नारेबाजी करते हुए आगे बढ़ रहे अभ्यर्थियों को रोकने के लिए पुलिस ने जेपी गोलंबर पर मजबूत बैरिकेडिंग लगा रखी थी। हालांकि, आक्रोशित अभ्यर्थियों ने पुलिस की बैरिकेडिंग उखाड़ फेंकी और डाकबंगला चौराहे की तरफ बढ़ गए। स्थिति बेकाबू होते देख पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा, जिससे राजधानी के मुख्य मार्गों पर काफी देर तक यातायात ठप्प रहा।

जमीन में गाड़े नीले ड्रमों से निकला बड़ा ‘खजाना’

500-500 के नोटों के बंडल से भरा था ड्रम

प्रयागराज (एजेंसी)। नीला ड्रम की बात सामने आते ही लोगों के जहन में डर पैदा हो जाता है। मेरठ की मुस्कान का नीला ड्रम वाला कांड के बारे में हर कोई जानता है। मुस्कान ने अपने पति की हत्या करने के बाद नीले ड्रम में रख दिया था। इसके बाद से नीला ड्रम क्राइम का प्रयाग बना हुआ है। अब प्रयागराज में भी एक नीला ड्रम पुलिस को बरामद हुआ है। इस बार नीला ड्रम में कोई लाश नहीं बल्कि नोटों के बंडल मिले हैं। नवाबगंज थाना क्षेत्र के

बरईपुर गांव में चौंकाने वाला मामला सामने आया है। पुलिस ने एक घर पर दबिश देकर जमीन के अंदर गाड़े गए तीन नीले ड्रमों को बरामद किया। ड्रमों को खोलने पर उनके अंदर 500-500 रुपये की नोटों की सैकड़ों बंडल भरे दिखे। नीला ड्रम वो भी नोटों से भरे हुए मिलने की घटना से क्षेत्र में खलबली मच गई।

मकान के अंदर कमरे की जमीन खोदकर ड्रम बरामद

पूरा मामला यह है कि बरईपुर रामनगर गांव में बुधवार देर शाम मुंबई पुलिस और प्रयागराज पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा एक राजेश यादव और राकेश यादव उर्फ महाकाल के मकान को घेर कर तलाशी अभियान शुरू किया गया। मकान के अंदर एक कमरे की जमीन खोदकर पुलिस ने 03 नीला ड्रम बरामद किया। ड्रम को खोलने पर पता चला कि उसमें पांच 500 - 500 नोटों की गंडियां भरी हुई हैं।

इंडिया ब्लॉक से गठबंधन कर सकती है सीजेपी

कार्यकर्ताओं से फीडबैक मांगा, 1 नवंबर की रैली को समर्थन

राहुल गांधी बोले-छात्र संगठन भी मार्च में आएँ, माहौल बनेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। काँकरोच जनता पार्टी ने विपक्ष की 1 नवंबर की रैली का समर्थन किया है। सीजेपी नेता आशुतोष रांका ने कहा कि पार्टी के लोग रामलीला मैदान में होने वाली रैली में शामिल हो सकते हैं। सीजेपी ने इंडिया ब्लॉक से गठबंधन के संकेत भी दिए हैं। उसने इस पर कार्यकर्ताओं से फीडबैक मांगा है। वहीं, राहुल गांधी ने गुरुवार को छात्र संगठनों से भी 1 नवंबर के दिल्ली चलो मार्च में आने की अपील की है। उन्होंने एक्स पर वीडियो जारी कर कहा कि पुलिस-लाठीचार्ज की चिंता नहीं



करें। घरबाने की जरूरत नहीं है। इस रैली की तैयारियों को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर पर ब्लॉक की बैठक हुई। इसमें प्रियंका गांधी वाड़ा समेत गठबंधन के कई नेता

राहुल बोले- ये किसी

राजनीतिक पार्टी का मार्च नहीं

राहुल ने कहा कि यह किसी एक राजनीतिक पार्टी का मार्च नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को बचाने का है। यह मार्च भारतीय संविधान और राष्ट्र की रक्षा के लिए है। एक नवंबर का मार्च लोकतंत्र बचाने, वोट चोरी रोकने और संविधान की रक्षा के लिए है। उन्होंने कहा कि अगर किसी को लगता है कि देश के लोकतंत्र, संविधान, विचारों और अपनी बात रखने की आजादी पर हमला हो रहा है तो उसे इस मार्च में शामिल होना चाहिए। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक शुक्रवार को ज्ञानेश कुमार के खिलाफ दिल्ली में पब्लिक महाभियोग प्रोग्राम करेगा। इसमें राहुल गांधी समेत विपक्षी नेता शामिल होंगे। दूसरी जगह पर परमिशन नहीं मिलने के बाद अब यह कार्यक्रम दोपहर 3.30 बजे 10 राजाजी मार्ग पर होगा। ये कार्यक्रम विपक्ष की 1 नवंबर को रामलीला मैदान पर होने वाली रैली से पहले होगा। पब्लिक महाभियोग में जनता या राजनीतिक दल किसी संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति के खिलाफ विरोध जताते हैं।

कैंसर का 80 हजार का इंजेक्शन 7 हजार में मिलेगा

543 दवाओं के दाम घटे, नई कीमतें 9 नवंबर से लागू होंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कैंसर की 543 दवा ब्रांडों और पैक की कीमतों में बदलाव किया गया है। राष्ट्रीय नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी के फैसले के बाद 397 यानी 73 फीसदी दवाओं के दाम घटाए गए हैं। इनमें 217 दवाओं की कीमत आधे से भी कम हो गई है। 97 ब्रांड की दवाओं की कीमतों में 70 फीसदी से



ज्यादा और 50 में 80 फीसदी से ज्यादा कटौती हुई है। पांच दवाओं की कीमतों में 90 फीसदी से ज्यादा कटौती हुई है। सबसे बड़ी कटौती

कीमत 40,421 से घटकर 2,720 हो गई है। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को सवाल किया था कि दवाओं की कीमतों पर लगाम क्यों नहीं लगाई जा रही। इसके बाद कंपनियों ने नई कीमतें जारी की हैं, जो 9 नवंबर से लागू होंगी। हालांकि, 146 ब्रांड-पैक की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। सरकार ने 137 एंटी-कैंसर दवाओं के ट्रेड मार्जिन को कम किया है।

कुछ महंगी दवाओं के दाम कम नहीं हुए

कैंसर की कई दवाओं के दाम घटाए गए हैं, लेकिन कुछ महंगी दवाओं की कीमतें पहले जैसी ही हैं। इनमें इम्युनोथेरेपी की दवा कीटर्कूड भी शामिल है, जिसका इस्तेमाल 21 से ज्यादा तरह के कैंसर के इलाज में होता है। इसकी कीमत अभी भी 2,16,500 है। बेस्ट कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली रिबोसाइक्लब की कीमत भी 24,435 पर बनी हुई है। इसके अलावा टैप्सिो, टेसेट्रिक, डाजालेक्स और इम्फंजी जैसी दवाओं के दामों में भी कोई बदलाव नहीं किया गया है। पेटेंट वाली दवाओं के दाम घटाना मुश्किल है, क्योंकि ये नई तकनीक और पेटेंट अधिकारों से जुड़ी होती हैं। कीमतें कम होने पर कंपनियां भारत में इनकी सप्लाई घटा या बंद कर सकती हैं। कैंसर और अन्य बीमारियों की दवाओं पर ज्यादा मुनाफा वसूलने के मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई जारी है। हाल ही में कोर्ट में 13 हजार के इंजेक्शन को 1 लाख से ज्यादा में बेचने का मामला भी उठा था।

ओडिशा में ‘अर्नब’ का कहर बाढ़ संकट में घिरे 300 गांव

आंध्र प्रदेश में रेलवे पुल डूबा, कई जगह हॉर्डिंग उखड़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। बंगाल की खाड़ी से उठा चक्रवाती तूफान अर्नब भले ही कमजोर पड़ गया है लेकिन देश भर में इसका असर जारी है। चक्रवात ने सबसे ज्यादा ओडिशा और आंध्र प्रदेश में तबाही मचाई



है। दोनों राज्यों में करीब 6 लोगों की मौत हुई है। ओडिशा के गंजाम जिले में लगातार 4 दिनों से भारी बारिश हो रही है। करीब 300 गांवों में बाढ़ आ गई है। राज्य सरकार इन इलाकों में फंसे लोगों को हेलीकॉप्टर से निकालने की तैयारी कर रही है। राज्य में अब तक करीब 30 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। वहीं, आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में एक रेलवे पुल पानी में डूब गया है, जिसके चलते दोनों ओर से ट्रेनों की आवाजाही रोक दी गई है। प्रशासन फंसे यात्रियों को सड़क के रास्ते निकालने की तैयारी कर रहा है। ओडिशा और आंध्र प्रदेश के कई इलाकों में हजारों पेड़ गिर गए हैं।

विकास के दौर में घुटता शहर का दम

(लेखक- राज कुमार सिन्हा)

विकास के दौर में घुटता शहर का दम आज के शहरीकरण की सबसे कड़वी सच्चाई बन चुका है। आधुनिकता की दौड़ में हम कंक्रीट के जंगल तो खड़े कर रहे हैं, लेकिन उस खुली हवा को खो रहे हैं जिसमें हम सांस लेते हैं। मौली-भरी जमीनों और पेड़ों को काटकर बहुमंजिला इमारतें और मॉल बनाए जा रहे हैं। हर घर में कई गाड़ियां होने के कारण सड़कों पर ट्रैफिक जाम और जहरीला धुआं (कार्बन मोनोऑक्साइड) आम बात हो गई है। शहरों के आस-पास लगी फैक्ट्रियों से निकलने वाला कैमिकल युक्त धुआं और कचरा हवा-पानी को जहरीला बना रहा है। प्लास्टिक और ठोस कचरे को सही तरीके से नष्ट न करके खुले में जलाया जाता है, जिससे हवा में प्रदूषण फैलता है। इससे शहरों में सांस के मरीज, अस्थमा, दिल की बीमारियां और फेफड़ों का कैंसर तेजी से बढ़ रहा है। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका सबसे बुरा असर पड़ रहा है। पेड़ न होने के कारण शहर हीट आइलैंड बन रहा है, जिससे गर्मियों में तापमान रिकॉर्ड तोड़ रहा है। हर समय का शोर, ट्रैफिक और हरियाली की कमी इंसानों में चिड़चिड़ापन और अवसाद (डिप्रेशन) बढ़ा रही है। वायु प्रदूषण के कारण व्यक्ति में तनाव पैदा करने वाले हार्मोनों का स्तर बढ़ जाता है और वह अवसाद का शिकार हो जाता है। बुजुर्गों में समझने की क्षमता में गिरावट संबंधी डिमेंशिया रोग हो जाता है। गर्भवती महिलाओं को गर्भपात जैसी समस्याओं का सामना करना होता है और गर्भस्थ शिशु का जन्म समय से पूर्व ही हो जाता है। दूसरी ओर जब शहर बिना किसी सही योजना के तेजी से फैलते हैं, तो वे पानी के प्राकृतिक बहाव को रोक देते हैं, जिससे भारी बारिश के दौरान पूरा शहर पानी में डूब जाता है। शहरों में जमीनों की बढ़ती कीमतों के कारण पुराने तालाबों, झीलों और आर्द्रभूमियों (वेटलैंड) को पाटकर उन पर इमारतें बना दी गई हैं। इससे बारिश के पानी को इकट्ठा होने की प्राकृतिक जगह नहीं मिलती है। सड़कों, फुटपाथों और इमारतों के निर्माण के कारण जमीन कंक्रीट से ढक जाती है। मिट्टी न होने के कारण बारिश का पानी जमीन के अंदर नहीं जा पाता। इसके परिणामस्वरूप 100 प्रतिशत पानी सतह पर बहने लगता है, जो जलभराव का रूप ले लेता है। नालों में प्लास्टिक, सॉलिड वेस्ट और निर्माण का मलबा फेंक दिया जाता है। इससे नाले जाम हो जाते हैं और मामूली बारिश में भी पानी

संपादकीय

पर्यावरण अनुकूल पर्यटन

इसमें दो राय नहीं कि देश के पहाड़ी राज्यों के लिये पर्यटन उद्योग अब अर्थव्यवस्था को गति देने का एक सशक्त माध्यम बन गया है। कह सकते हैं तमाम पारिस्थितिकीय चुनौतियों के चलते एक मजबूरी भी बन गया है। लेकिन इसमें दो राय नहीं है कि राजस्व सृजन और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिये, राज्य सरकारें एक कठिन राह पर चलना सीख रही हैं। दरअसल, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और संरक्षित क्षेत्रों में यह चुनौती ज्यादा बड़ी है। यही वजह है कि हिमाचल प्रदेश के संवेदनशील स्पीति के इलाके में प्रदेश के वन विभाग ने आने वाले पर्यटकों के लिए दैनिक आधार पर उपयोगकर्ता शुल्क आरंभ करने का निर्णय किया है। निश्चित रूप से हिमाचल सरकार की इस अभिनव पहल का स्वागत ही किया जाना चाहिए। निस्संदेह, इस फैसले के बाद अब बिना किसी प्रवेश शुल्क के इन इलाकों में पहुंचना अतीत की बात हो जाएगी। इतना ही नहीं शूटिंग के लिये, मसलन वृत्तचित्र, फीचर फिल्मों व विज्ञापन आदि के साथ ही टेंट लगाने जैसी गतिविधियों के लिये भी शुल्क संरचना तैयार की गई है। यह एक हकीकत है कि पर्यटकों का अराजक व्यवहार वातावरण में न केवल पर्यावरणीय प्रदूषण फैलता है बल्कि ठोस कचरा भी छोड़कर जाता है। जिसकी क्षति व सफाई का दबाव राज्य पर पड़ता है। निस्संदेह, सरकार की नई पहल का उद्देश्य आदिवासी जिले लाहौल और स्पीति में पर्यटन के कार्बन फुटप्रिंट को कम करना है। इसके अलावा हिमाचल उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में आगंतुकों के लिये सुविधाओं का विस्तार करना भी है। दरअसल, राज्य सरकार सीमावर्ती इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा दे रही है और प्रोटोकॉल में संशोधन करके यात्रियों की पहुंच को आसान बना रही है। ऐसी ही एक पहल मंगलवार को किन्नौर जिले के शिपकी-ला में मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू ने शुरू की। दरअसल, इन क्षेत्रों के सामरिक महत्व को देखते हुए राज्य के अधिकारी सेना और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के साथ समन्वय बनाकर काम कर रहे हैं। निश्चित रूप से हिमाचल प्रदेश सरकार की यह पहल स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिये, खासकर दूरदराज के गांवों के लिये अच्छा संकेत है। जब ग्रामीणों का जन-जीवन बाहर से आने वाले पर्यटकों की गतिविधियों से प्रभावित होता है तो उन्हें पर्यटन से होने वाले लाभ भी मिलने चाहिए। वहीं पर्यटकों की सुरक्षा का भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। पहलगाम आतंकी हमले ने हमें कई सबक दिए हैं। सबक याद दिलाए हैं कि यदि पर्यटकों की सुरक्षा दांव पर हो तो लापरवाही व चूक के लिये कोई जगह नहीं हो सकती। कश्मीर का हालिया अनुभव बताता है कि जब पर्यटक असुरक्षित महसूस करते हैं तो पर्यटन उद्योग को उसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यही वजह है कि जम्मू-कश्मीर जाने वाले पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट आ रही है। ऐसे में पर्यटक जम्मू-कश्मीर के विकल्प के रूप में हिमाचल की ओर रुख कर सकते हैं। जिससे हिमाचल के पर्यटन उद्योग को नई प्राण वायु मिल सकती है। ऐसे में हिमाचल प्रदेश सरकार को यह सुनिश्चित करने के लिये हर संभव प्रयास करना होगा कि नियमित पर्यटन से हिमाचल को न केवल वर्तमान में बल्कि दीर्घकालिक लाभ भी प्राप्त हो।

विचार मंथन

(लेखक - सनत जैन)

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का मूल उद्देश्य दुनिया को युद्ध, हिंसा और विनाश से बचाना तथा अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और सहयोग को मजबूत करना था। आज वैश्विक परिस्थितियां सवाल उठा रही हैं, क्या संयुक्त राष्ट्र अपने मूल उद्देश्यों को पूरा कर पा रहा है? इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष से लेकर रूस-यूक्रेन युद्ध तक, लंबे समय से जारी हिंसा और नागरिकों की मौतें अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की प्रभावशीलता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। ऐसे समय में सुरक्षा परिषद में सुधार और स्थायी सदस्यों के बीच समान अधिकारों की मांग महत्वपूर्ण हो जाती है। संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के प्रतिनिधि पर्वथानैनी ने सुरक्षा परिषद में सुधार की

आवश्यकता पर भारत का पक्ष रखते हुए वीटो के अधिकार को समानता के सिद्धांत से जोड़ने की बात कही। भारत का तर्क है कि यदि सुरक्षा परिषद का विस्तार कर नए स्थायी सदस्य शामिल किए जाते हैं, तो उन्हें भी वीटो का अधिकार मिलना चाहिए। वर्तमान व्यवस्था में पांच स्थायी सदस्य अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस को वीटो प्राप्त है। इससे इन देशों को ऐसे प्रस्तावों को रोकने की शक्ति मिलती है, जिन्हें अन्य सदस्य देश बहुमत से समर्थन दे सकते हैं।

सवाल यह है कि क्या विश्व शांति की जिम्मेदारी उठाने वाली संस्था में अधिकारों का असमान वितरण न्यायसंगत है? भारत लंबे समय से सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की मांग कर रहा है। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश और प्रमुख विकासशील

अर्थव्यवस्थाओं में शामिल भारत का मानना ​​है, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी यह बात अंतर्राष्ट्रीय मंच से कह चुके हैं। वैश्विक निर्णय प्रक्रिया में भारत की भी भूमिका वास्तविक और प्रभावी होनी चाहिए। हालांकि, वीटो सहित सुरक्षा परिषद के सुधार पर सदस्य देशों के बीच सहजति बनाना एक बड़ी जटिल अंतर्राष्ट्रीय चुनौती है। सुरक्षा परिषद की सीमाएं केवल प्रतिनिधित्व तक ही नहीं हैं। जब शक्तिशाली देशों के हित टकराते हैं, तो वीटो के कारण सामूहिक हित बाधित होते हैं। परिणामस्वरूप युद्ध रोकने, मानवीय सहायता पहुंचाने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास पर्यावरण संरक्षण कमजोर पड़ते हैं। इससे संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। छोटे तथा विकासशील देशों के मन में यह सवाल पैदा होता है, क्या

अंतर्राष्ट्रीय कानून सभी पर समान रूप से लागू होता है? पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह से अमेरिका या नाटो देशों ने जिस तरह से एक तरफ आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं, उसको लेकर अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं कमजोर साबित होने लगी हैं। अमेरिका द्वारा रूस, ईरान जैसे देश की बहुत बड़ी रकम को जप्त कर लेना, भारत चीन और अन्य देशों पर मनमाने तरीके से टेरिफ बढ़ा देना, वैश्विक व्यापार संधि का उल्लंघन करना, डब्ल्यूटीओ और पर्यावरण से संबंधित नियमों का पालन नहीं करना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की आर्थिक सहायता को रोक देना, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को कमजोर कर रही हैं। इस व्यवस्था का प्रभाव केवल कूटनीति और सुरक्षा तक सीमित नहीं रहता। युद्धों पर होने वाला भारी खर्च, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और

सामाजिक कल्याण के लिए उपलब्ध संसाधनों को प्रभावित करता है।

हथियारों की दौड़ के बीच दुनिया के अनेक हिस्सों में गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है। आर्थिक असमानता बढ़ने से सामाजिक असंतोष और विरोध प्रदर्शनों की स्थितियां पैदा होती हैं। शांति का अर्थ केवल युद्धविराम नहीं, बल्कि ऐसा सामाजिक वातावरण भी है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन, भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। प्रकृति की सुरक्षा भी इसी वैश्विक जिम्मेदारी का अभिन्न हिस्सा है। जलवायु परिवर्तन, जंगलों का विनाश, खनिज संसाधनों का अनियंत्रित दोहन, समुद्रों में प्रदूषण और जैव विविधता का क्षरण किसी एक देश की समस्या नहीं हैं। अनियमित वर्षा, भीषण गर्मी, बाढ़, सूखा और ग्लेशियरों

का पिघलना मानव जीवन और अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा कर रहे हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, जवाबदेही और प्रभावी कार्रवाई आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, जवाबदेह और प्रभावी बनाना समय की मांग है। सुरक्षा परिषद में सुधार के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का निष्पक्ष एवं सार्वजनिक तरीकों से अनुपालन, संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान, मानवीय सहायता और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देनी होगी। विकसित और विकासशील देशों के बीच विश्वास बढ़ाना तथा छोटे देशों की आवाज को निर्णय प्रक्रिया में पर्याप्त स्थान देने पर ही संयुक्त राष्ट्र संघ मजबूत होगा। संयुक्त राष्ट्र की शक्ति केवल उसके प्रस्तावों में नहीं, बल्कि उन पर अमल कराने की सामूहिक इच्छाशक्ति में निहित है।

(लेखक - ललित गर्ग)

भारत की संस्कृति में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। यहाँ कहा गया है-‘मातृदेवो भव, पितृदेवो भव।’ जिस देश में माता-पिता के चरणों में स्वर्ग देखने की परंपरा रही हो, उसी देश में यदि वृद्धावस्था में माता-पिता अपने ही घर में उपेक्षा, अपमान, अकेलेपन और असुरक्षा का दंश झेलने को विवश हों, तो यह केवल पारिवारिक विघटन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना के सामने खड़ा एक गंभीर प्रश्न है। जिस बुजुर्ग ने अपनी संतान के भविष्य के लिए वर्तमान को खपा दिया, यदि उसी संतान के पास उसके बुढ़ापे के लिए समय, संवेदना और स्नेह न बचे, तो विकास की चमक के बीच मानवीय मूल्यों का अंधेरा साफ दिखाई देता है। ऐसे समय में केरल विधानसभा द्वारा अक्टूबर 2026 में वरिष्ठ नागरिकों के संरक्षण से संबंधित व्यापक विधेयक पारित किया जाना एक अशाजनक पहल है। यह कानून की किताब में जुड़ा एक नया अध्याय भर नहीं, बल्कि बुजुर्गों की जीवन में सम्मान, सुरक्षा और भरोसे का नया सूर्योदय बनने की क्षमता रखता है। भारत में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के नागरिकों की संख्या लगभग 15 करोड़ बताई जा रही है। अनुमान है कि यह आबादी 2036 तक लगभग 23 करोड़ और 2050 तक 34 करोड़ से अधिक हो सकती है। यह बदलती जनसांख्यिकी हमें चेतावनी भी देती है और अवसर भी। चिकित्सा विज्ञान की प्रगति तथा बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं ने मनुष्य की आयु बढ़ाई है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हमने जीवन की बढ़ती अवधि को गरिमापूर्ण बनाने की तैयारी भी की है? सिर्फ लंबी उम्र उपलब्धि नहीं है, उस उम्र में सम्मान, आत्मनिर्भरता और अपनापन बनाए रखना ही वास्तविक उपलब्धि है। केरल की इस पहल का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि यह बुजुर्गों की समस्याओं को केवल परिवार की निजी जिम्मेदारी मानकर छोड़ देने के बजाय सामाजिक और संस्थागत दायित्व के रूप में देखती है। विधेयक में वरिष्ठ नागरिकों के साथ शारीरिक एवं

मानसिक दुर्व्यवहार, क्रूरता और उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें बेसहारा छोड़ने जैसे कृत्यों के लिए दंड का प्रावधान किया गया है। इसके साथ संरक्षण इच्छाओं, देखभाल केंद्रों के नियमन, देखभालकर्ताओं के प्रशिक्षण और शिकायतों के निवारण जैसी व्यवस्थाओं पर जोर दिया गया है। साइबर धोखाधड़ी से बचाव तथा बुजुर्गों के स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों के अधिकार जैसे विषयों को स्थान देना भी बदलते समय की जरूरतों को समझने का संकेत है। इस पहल को मूल संदेश स्पष्ट है- बुजुर्गों की सेवा सद्भावना का विषय अवश्य है, लेकिन उनकी सुरक्षा और गरिमा सुनिश्चित करना सामाजिक व्यवस्था का अनिवार्य दायित्व भी है। इस विधेयक की सबसे संवेदनशील अवधारणा है-‘एजिंग इन प्लेस’, अर्थात बुजुर्गों को यथासंभव उनके अपने घर और परिचित परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर देना। वृद्धाश्रमों की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन माता-पिता के लिए घर का एक कमरा भी तब अधिक मूल्यवान होता है, जब उसमें अपनत्व की गर्माहट हो। बुजुर्गों को केवल भोजन, दवा और बिस्तर नहीं चाहिए, उन्हें बातचीत करने वाला साथी, उनकी बात सुनने वाला कान, उनके अनुभवों को समझने वाला मन और उनके अस्तित्व को स्वीकार करने वाला परिवार चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर कई बार आर्थिक अभाव से अधिक भावनात्मक अभाव पीड़ा देता है। जिस घर में बुजुर्गों की आवाज अनसुनी हो जाती है, वहाँ दीवारें तो रहती हैं, लेकिन परिवार की आत्मा कमजोर पड़ने लगती है। आज संयुक्त परिवारों का विघटन, महानगरों की भागदौड़, विदेशों की ओर पलायन और बढ़ती व्यक्तिवादी प्रवृत्ति ने बुजुर्गों के जीवन को कठिन बनाया है। कभी दादा-दादी और नाना-नानी परिवार की जीवंत पाठशाला होते थे, उनकी कहानियों में इतिहास, अनुभवों में विवेक और आशीर्वाद में जीवन की पूँजी मिलती थी। आज उसी अनुभव-संपदा को कई बार अप्रयुगीनी समझ लिया जाता है। संपत्ति के लिए माता-पिता पर दबाव डालना, उनकी जमा-पूँजी पर अनुचित अधिकार जमाना, बीमारी में उन्हें अकेला छोड़ देना

खुद तय करें कि अगले जन्म में क्या बनेंगे

अगले जन्म में आप धनवान बनेंगे या गरीब, एक्टर बनेंगे या डॉक्टर यह सब आप पर निर्भर है। हो सकता है कि आप इस पर यकीन न करें लेकिन सब यही है। इसका प्रमाण है श्रीमद्भगवत् गीता। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि आत्मा अमर है। एक शरीर को छोड़कर आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है। अर्जुन को समझाते हुए श्री कृष्ण ने कहा है कि ऐसा कोई समय नहीं है जब तुम और मैं नहीं थे। आने वाला ऐसा कोई समय नहीं है जब हम और तुम नहीं होंगे। भगवान प्रत्यक्ष रूप से कहते हैं आत्मा निरंतर एक शरीर से दूसरे शरीर में पहुंचकर अपनी यात्रा जारी रखती है। यानी आप चाहें या न चाहें आपको अगल जन्म लेना है। आपके हाथ में बस इतना है कि आप अगले जन्म में खुद को किस रूप में देखना चाहते हैं यह तय करें। आप कहेंगे कि जब हम खुद ही तय कर सकते हैं कि हमें अगले जन्म में क्या बनना है तो हर व्यक्ति धनवान और सुखी होता है। लेकिन इस दुनियां में गरीब भी हैं और दुखी भी हैं। श्रीमद्भगवत गीता में इस प्रश्न का भी उत्तर है। गीता के अष्टम में अध्याय में लिखा है, श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं ‘यं यं वापि स्मरन्भाव

त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद् भावभावित- इसका अर्थ है, ‘’ हे कून्तीपुत्र अर्जुन! यह मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, उस उसको ही प्राप्त होता है, वयोंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है।

यानी आप अंत समय में जिन-जिन चीजों का ध्यान करेंगे अगले जन्म में उन चीजों को प्राप्त करेंगे। इसी मान्यता के कारण बहुत से लोग अपने बच्चों का नाम भगवान के नाम पर अर्थात राम, विष्णु, कृष्ण, गोविंद आदि रखते हैं। इसका उद्देश्य यह रहता है कि जीवन काल में संतान का नाम लेते हुए भगवान का भी स्मरण बना रहे।

आमतौर पर मनुष्य का अपनी संतान से बहुत अधिक मोह रहता है, मरते समय वह अपनी संतान का मुख देना चाहता है और उसे ही याद करता है। संतान का नाम ईश्वर के नाम पर होने से मरते समय संतान को याद करते हुए व्यक्ति ईश्वर का भी ध्यान कर लेता है जिससे मुक्ति मिल जाती है। इसलिए हमेशा उस बात का ध्यान करिये जो आप बनना चाहते हैं।

सर्दियों में आपकी सेहत

इन सर्दियों में यदि आप अपनी सेहत बनाने की सोच रहे हैं तो सबसे पहले पेट साफ करने की जरूरत है। पेट में कब्ज रहेगा तो कितने ही पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें, लाभ नहीं होगा। भोजन समय पर तथा चबा-चबाकर खाना चाहिए, ताकि पाचन शक्ति ठीक बनी रहे, फिर पौष्टिक आहार या औषधि का सेवन करना चाहिए। आचार्य चरक ने कहा है कि पुरुष के शरीर में वीर्य तथा स्त्री के शरीर में ओज होना चाहिए, तभी चेहरे पर चमक व कांति नजर आती है और शरीर पुष्ट दिखता है। हम यहाँ कुछ ऐसे पौष्टिक पदार्थों की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक के लोग सेवन कर लाभ उठा सकते हैं और बलवान बन सकते हैं-

- सोते समय एक गिलास मीठे गुनगुने गर्म दूध में एक चम्मच शुद्ध घी डालकर पीना चाहिए।
- दूध की मलाई तथा पिसी मिश्री जरूरत के अनुसार मिलाकर खाना चाहिए, यह अत्यंत शक्तिवर्धक है।
- एक बादाम को पत्थर पर घिसकर दूध में मिलाकर पीना चाहिए, इससे अपार बल मिलता है। बादाम को घिसकर ही उपयोग में लें।
- छछ से निकाला गया ताजा माखन तथा मिश्री मिलाकर खाना चाहिए, ऊपर से पानी बिलकुल न पिएँ।
- 50 ग्राम उड़द की दाल आधा लीटर दूध में पकाकर खीर बनाकर खाने से अपार बल प्राप्त होता है।



खीर पूरे शरीर को पुष्ट करती है।
● प्रातः एक पाव दूध तथा दो-तीन केले साथ में खाने से बल मिलता है, कांति बढ़ती है।

- एक चम्मच असगंध चूर्ण तथा एक चम्मच मिश्री मिलाकर गुनगुने एक पाव दूध के साथ प्रातः व रात को सेवन करें, रात को सेवन के बाद कुछ कर सो जायें। 40 दिन में परिवर्तन नजर आने लगेगा।
- सफेद मूसली या धोली मूसली का पावडर, जो स्वयं कूटकर बनाया हो, एक चम्मच तथा पिसी मिश्री एक चम्मच लेकर सुबह व रात को सोने से पहले गुनगुने एक पाव दूध के साथ लें। यह अत्यंत शक्तिवर्धक है।
- सुबह-शाम भोजन के बाद सेवफल, अनार, केले या जो भी मौसमी फल हों, खाएँ।
- सुबह एक पाव उंडे दूध में एक बड़ा चम्मच शहद मिलाकर पीने से खून साफ होता है, शरीर में खून की वृद्धि होती है।
- प्याज का रस 2 चम्मच, शहद 1 चम्मच, घी चौथाई चम्मच मिलाकर सेवन करें और स्वयं शक्ति का चमत्कार देखें। यह नुस्खा यौन शक्ति बढ़ाने में अचूक है। ऊपर वर्णित नुस्खे स्त्री-पुरुष दोनों के लिए समान हैं। इन्हें अनुकूल मात्रा में उचित विधि से सुबह-रात को सेवन करना चाहिए।
- भोजन में घी, दूध, चावल, उड़द, नारियल, मलाई, मक्खन, शहद, मौसमी फल, हलवा, हरी साग-भाजी, टमाटर, गाजर, आंवला आदि का सेवन करना चाहिए।
- सर्दियों में बादाम का हलवा, दूध में पकाया हुआ छहारा, मीठा अनार, प्याज का रस, नारियल की गिरी और दूध की खीर, उड़द



- दाल का लड्डू, गन्ना रस, सौंठ और काली मिर्च तथा मैथी का लड्डू बहुत फायदेमंद है। योग्य वैद्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ताकि अपने शरीर के अनुकूल पथ्य-अपथ्य का चयन किया जा सके।
- चिकनाईयुक्त, मधुर, लवण और अम्ल रस वाले पदार्थ का सेवन करके अपना स्वास्थ्य बनाए रखें। बासी, दुर्गंधयुक्त, अधिक चटपटे मसालेदार खानपान से बचना ही श्रेयस्कर है।
- ठीक समय पर, चबा-चबाकर प्रसन्नतापूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन के पूर्व नींबू पानी और भोजन के पश्चात छछ पीना लाभदायक होता है।
- इस ऋतु में रूखे, कटु-तिक्त-कषाय, अति शीतल और वात प्रधान भोज्य पदार्थ न खाएँ। अन्यथा जोड़ों के दर्द, गठिया और सायटिका से पीड़ित हो सकते हैं। इसी प्रकार अधिक खटाई से भी बचें, ताकि खाँसी-सर्दी, जुकाम, नजला आदि से बचाव हो सके। नींबू और ताजा दही वर्जित नहीं हैं।
- शीतऋतु में अधिक देर तक भूखे न रहें, क्योंकि जठराग्नि की प्रबलता के कारण यथासमय भोजन नहीं करने से यह अग्नि शरीर की धातुओं को जला डालती है, जिससे जीवन-शक्ति का क्षय होता है।
- सेहत बनाने के लिए प्रतिदिन स्नान भी जरूरी है। कुछ लोग ठंड के डर से कई दिन तक नहाते नहीं, यह उचित नहीं। पानी कुनकुना कर लेना चाहिए। अत्यधिक ठंडा और अधिक गर्म पानी नुकसान पहुँचाता है।
- मल-मूत्र विसर्जन में आलस्य नहीं करना चाहिए। रात को सिर ढँककर सोना भी उचित नहीं होता।

स्वस्थ रहने के आसान उपाय

सुबह जल्दी उठो और 4- 6 किलोमीटर रोज टहलो। संभव हो तो शाम को भी थोड़ा टहलो। टहलते समय नाक से लम्बी- लम्बी सांसें लो तथा यह भावना करो कि टहलने से 2. टहलते समय नाक से लम्बी- लम्बी सांसें लो तथा यह भावना करो कि टहलने से आप अपने स्वास्थ्य को संवार रहे हैं।

टहलने के अलावा, दौड़ना, साइकिल चलाना, घुड़सवारी, तैरना या कोई भी खेलकूद, व्यायाम के अच्छे उपाय हैं। स्त्रियां चक्की पीसना, रस्सीकूटना, पानी भरना, झाड़ू- पोछा लगाना आदि घर के कामों में भी अच्छा व्यायाम कर सकती हैं। रोज थोड़े समय छोटे बच्चों के साथ खेलना, 10- 15 मिनट खुलकर हंसना भी अच्छे व्यायाम के अंग हैं।

प्रातः टहलने के बाद भूख अच्छी लगती है। इस समय पौष्टिक पदार्थों का सेवन करें। अंकुरित अन्न, भीगी मूँगफली, आंवला या इससे बना कोई पदार्थ, संतरा या मौसमी का रस अच्छे नाश्ता का अंग होते हैं। भोजन सादा करो एवं उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करो, शांत, प्रसन्न और निश्चिन्ता पूर्वक करो और उसे अच्छी तरह चबाचबा कर खाओ। खाते समय न बात करो और न हँसो। एकाग्र चित्त होकर भोजन करना चाहिए। भूख से कम खाओ

अथवा आधा पेट खाओ, चौथाई पानी के लिए एवं चौथाई पेट हवा के लिए खाली छोड़ो।

भोजन में रोज अंकुरित अन्न अवश्य शामिल करो। अंकुरित अन्न में पौष्टिकता एवं खनिज लवण गुणात्मक मात्रा में बढ़ जाते हैं। इनमें मूँग सर्वोत्तम है। चना, अंकुरित या भीगी मूँगफली इसमें थोड़ी मेथी दाना एवं चुटकी भर- अजवायन मिला लें तो यह कई रोगों का प्रतिरोधक एवं प्रभावी इलाज है।

मौसम की ताजा हरी सब्जी और ताजे फल खूब खाओ। जितना हो सके कच्चे खाओ अन्यथा आधी उबली/ उबली तथा कम मिर्च- मसाले, खटाई की सब्जियां खाओ। एक ग्रास रोटी के साथ चार ग्रास सब्जी के अनुपात का प्रयास रखो।

आटा चोकर समेत खाओ, सम्भव हो तो हाथ का पिसा हुआ खाओ। जौ, गेहूँ, चना, सोयाबीन का मिस्सी रोटी का आटा सुपाच्य एवं पौष्टिक होता है। पौष्टिकता की दृष्टि से रोटी में हरी सब्जी, पालक, मेथी, बथुआ आदि पत्तीदार सब्जी मिलाकर बनायें / खायें। दलिया / खिचड़ी में भी पत्तीदार एवं हरी सब्जियाँ मिलाकर पौष्टिकता बढ़ाई जा सकती है। सब्जियों के सूप का नित्य सेवन पौष्टिक एवं हलके भोजन का अच्छा अंग हो सकता है। भोजन के समय पानी कम से कम पियो। दोपहर के भोजन के घंटे



भर बाद पानी पियें। भोजन यदि कड़ा और रूखा हो तो 2- 4 घूंट पानी अवश्य पियें।

प्रातः उठते ही खूब पानी पियो। दोपहर भोजन के थोड़ी देर बाद छछ और रात को सोने के पहले उष्ण दूध अमृत समान है। दिन में कम से कम दो- तीन लीटर पानी अवश्य पियो। धूपपान, मादक पेय- पदार्थ (जरदा, गुटखा, सॉफ्ट ड्रिंक जैसे कोकाकोला, पेप्सी इत्यादि एवं शराब आदि) सर्वथा छोड़ दो। चाय- कॉफी आदि के स्थान पर सादा ठंडा या गुनगुना पानी, नींबू पानी, छछ, गाजर, पालक चुकन्दर, लौकी, टमाटर इत्यादि सब्जियों का एव

मौसमी या संतरा, पीपता इत्यादि फलों के रस का उपयोग लाभकारी होता है। डाइबेटीज (शक्कर) के रोगी को शक्कर या उससे बने पदार्थों से पूर्ण परहेज करना चाहिए। फलों में अधिक मीठे फल का सेवन कम करें। फल के रस के बजाय फल खायें। मेथी दाना और करेला मधुमेह रोग की राम बाण दवा है। मैथी दाना रोज 18/24 घंटे पानी में, जहाँ तक संभव हो सके मिट्टी के बर्तन में भिगोयें। दूसरे दिन सुबह नाश्ते के पहले या बाद में दानामेथी का पानी पी लें। दानामेथी अंकुरित कर सलाद में या नमक, नींबू लगाकर भी खा सकते हैं।



स्वस्थ और सुंदर दिखने के नुस्खे दादी माँ के पिटारे से लेकर आधुनिक साजो-सामान में बिखरे पड़े हैं। प्रत्येक समय, काल में सुंदरता का पैमाना भी परिवर्तित हुआ है। जहाँ प्राचीन समय में गहनों से लकदक, लहराती केश राशि से सुसज्जित, सजीली-लजीली सुंदरियों का वर्चस्व था तो आज टाईट जींसधारी, लंबी, दुबली, छरहरी काया सुंदरता के मानदंड में शामिल है। प्रत्येक स्त्री अपनी सुंदरता के प्रति संजग है। अधिक चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए डाइटिंग, योग, व्यायाम या एरोबिक्स का सहारा लेती है। बढ़ते हुए वजन या थुलथुल शरीर से चिंताग्रस्त, सदैव उदास और थका हुआ महसूस करने वाली स्त्रियां तथा जो अपनी व्यस्तता के कारण व्यायाम नहीं कर पाती या बेडौल काया के कारण योग क्लास, हेल्थ क्लब जाने में संकोच करने वाली स्त्रियों के लिए एरोबिक्स वरदान साबित हुआ है। एरोबिक्स यानी संगीत की धुन पर किए जाने वाले व्यायाम। एरोबिक्स करने के

लिए कोई विशेष साजो-सामान की जरूरत नहीं होती। बस पर्याप्त स्थान हो, इस हेतु आप कमरे से फर्नीचर हटाकर स्थान बना सकती है। पॉप, रॉक, जाज संगीत का कोई कैसेट या कर्णाप्रिय धुन तथा तेज लय वाला कोई भी कैसेट लेकर उसी आधार पर नृत्य करें। कैसेट लेते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि व्यायाम के समय जिन अंगों को रिदम पर थिरकन देना है उसके लिए सही रिदम और संगीत उस कैसेट में अवश्य हो। इन धुनों पर जॉगिंग, रनिंग,



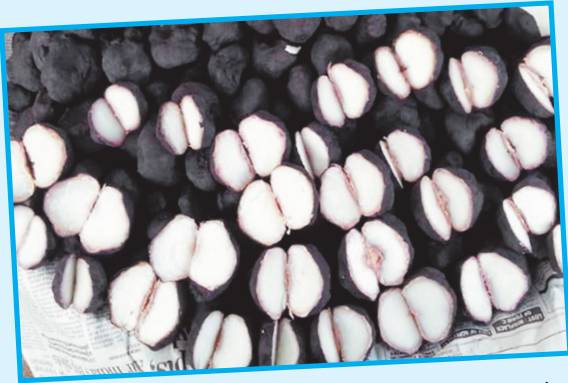
यानी डांस, फन, रिदम और हेल्थ

साइकिलिंग, तैराकी, जैसी गति में थिरकन की जाती है। इस हेतु जेनफॉडा द्वारा तैयार किए गए लयात्मक योग व्यायाम की कैसेट बाजार में उपलब्ध है। भारतीय सिने अभिनेत्री रेखा ने भी एरोबिक्स पर एक ऑडियो कैसेट माईड एंड बॉडी तैयार किया है। इसमें योग और व्यायाम को लेकर एरोबिक्स के लिए धुन तैयार की है। अनीता राज, शिल्पा शेठ्ठी ने भी वीडियो कैसेट तैयार किए हैं। एरोबिक्स व्यायाम अकेले भी किए जा सकते हैं और समूह के साथ भी। समूह के साथ करने का अलग ही मजा है। सप्ताह में तीन-चार बार या समय उपलब्ध होने पर

प्रतिदिन भी व्यायाम किया जा सकता है। वैसे भी अपेक्षाकृत इसमें बहुत ही कम समय लगता है। लगभग दस से बीस मिनट लगते हैं। एरोबिक्स करने वाले लोगों का कहना है कि वे इस अनूठे नृत्य व्यायाम से तन-मन की प्रसन्नता महसूस करते हैं और शरीर पर जमी अनावश्यक चर्बी गायब हो जाती है। इन्हें करने के लिए कोई शिक्षक हो यह आवश्यक नहीं। एरोबिक्स के बारे में संगीत के रसिक तथा उद्योगपति का मानना है कि इस व्यायाम से उनमें अधिक चुस्ती-फुर्ती आती है और वे अधिक हल्का महसूस करते हैं। संगीत की सुमधुर आवाज तनाव, चिंता दूर करने में सहायक है। एरोबिक्स निश्चय ही जीवन में अनोखा बदलाव लाता है। होटलों, हेल्थ क्लबों, ब्यूटी पार्सर्स, यहाँ तक की कई लोगों ने निजी कक्षाएँ भी खोल ली हैं, जहाँ 100 रुपए से लेकर 5000 रुपए तक फीस वसूली जाती है। आप अपने स्टैंडर्ड के अनुसार इन कक्षाओं में शामिल हो सकते हैं या घर में ही मुफ्त में इसका आनंद उठा सकते हैं।

लाभदायक है सर्दियों में

सिंघाड़े का सेवन



सर्दियां शुरू होते ही बाजार में सिंघाड़े आसानी से प्राप्त हो जाते हैं और यह खाने में बहुत स्वादिष्ट होते हैं। सिंघाड़ा हमारी सेहत के लिए बहुत लाभदायक होता है इसमें पाए जाने वाले पौष्टिक तत्व हमारी शरीर को तंदरुस्त रखने में मदद करते हैं। सिंघाड़े में वैसे तो विटामिन बी,फाइबर और भी कई पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं पर विटामिन ए और सी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं जो हमारी त्वचा को सुंदर बनाने में मदद करते हैं। हमारे शरीर को भी शक्ति प्रदान करता है।

- सिंघाड़े का सेवन करने से त्वचा में चमक तो आती ही है और त्वचा निखारने में भी मदद करता है।
- कच्चे सिंघाड़े का सेवन करने से शरीर में खून की मात्रा बढ़ जाती है।
- सर्दियों में सिंघाड़े का सेवन करना काफी लाभदायक होता है ,सिंघाड़े खाने से त्वचा तो निखरती ही है और साथ ही खुश्की की समस्या भी दूर हो जाती है।
- सिंघाड़े का सेवन करने से त्वचा संबंधी सभी रोगों से छुटकारा मिलता है जैसे भूप की अल्ट्रावायलेट किरणों से भी त्वचा की रक्षा करता है।
- सिंघाड़े का सेवन करने से गले में होने वाली खराश से राहत मिलती है और खांसी से भी छुटकारा मिलता है।
- सिंघाड़े का सेवन करने से हमें कई रोगों से राहत मिलती है जैसे पोलिया के रोगियों के लिए भी काफी फायदेमंद होता है।
- सिंघाड़े खाने से त्वचा पर पड़ने वाली झुर्रियां से भी राहत मिलती है।

औषधीय गुणों से भरपूर

अजवायन



- अजीर्ण की शिकायत होने पर अजवायन का तेल तथा अर्क शीघ्र लाभ देते हैं।
- उदर शूल होने पर भी अजवायन का अर्क या तेल दें।
- दांत दर्द करते हों तो अजवायन को धीरे-धीरे चबाएं। चबाते समय दबाव कम डालें। रस निगल जाएं।
- मुंह से दुर्गंध आती हो तो भी अजवायन चबाया करें।
- सर्दी का बुखार परेशान करता हो तो अजवायन को गुड़ के साथ खाया करें। 5-6 दिनों में पूर्ण ठीक हो जाएंगे।
- जिन्हें सूतिका बुखार हो जाए, वह अजवायन का सेवन करें।
- प्रसूता नारियों को अजवायन खिलाने पर उनकी भूख खुल जाती है। उनकी पाचन शक्ति में वृद्धि होने लगती है।
- वायु गोलता की शिकायत होने पर अजवायन एक चम्मच, काला नमक चौथाई चम्मच, पीस-छानकर ताजा पानी से लें।
- बार-बार पेशाब की शिकायत होने पर अजवायन तथा तिल मिलाकर रोगी को खिलाएं।
- गुदों का दर्द हो तो गुड़, पिसी कच्ची अजवायन, दोनों एक समान मात्रा में लें। मात्रा एक चम्मच, दिन में 4 बार।
- शरीर में शक्ति संचार करने के लिए यह चूर्ण, दिन में 2 बार, आधा चम्मच एक समय, ताजा पानी से दें।
- फोड़ा-फुसी की सूजन होने पर नींबू के रस में अजवायन पीसकर दिन में 2 बार लेप करें।

घर के कामकाज से

कम होता है तनाव

अगर आप तनाव के दौर से गुजर रहे हैं तो घरेलू कामकाज कीजिए। महज 20 मिनट का घरेलू काम आपको राहत देगा। आपका तनाव भागेगा और मानसिक रूप से आप स्वस्थ महसूस करेंगे। ब्रिटेन के अनुसंधानकर्ताओं का मानना है कि सप्ताह में कम से कम एक बार घरेलू कामकाज जैसी शारीरिक गतिविधियों के जरिये तनाव को कम किया जा सकता है। इसमें साफ-सफाई, बाग-बगीचे की देखभाल, मकान का रखरखाव आदि भी शामिल हैं। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए लंदन के यूनिवर्सिटी कॉलेज के मार्क हेमर के नेतृत्व में एक अध्ययन किया गया। उन्होंने अपने अध्ययन में 20000 लोगों को शामिल किया और उनकी दिमागी हालत को जानने का प्रयास किया।

यू. तो नियमित कसरत को मानसिक स्वास्थ्य के लिए बढ़िया माना जाता है, लेकिन विशेषज्ञ भी इस बात पर राजी नहीं हो सके कि किस तरह की और कितनी कसरत करना चाहिए।



इजरायल चुनाव में नेतन्याहू समर्थक खेमे को बढ़त : ट्रंप ने थपथपाई अपनी पीठ

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इजरायली प्रधानमंत्री बेजाकिन नेतन्याहू के समर्थन में किए प्रचार से हुए फायदे का जिक्र किया है। उनकी बढ़त से उत्साहित ट्रंप ने दावा किया कि उनके एक ऐलान से इजरायली नेता की चुनावी स्थिति में सुधार हुआ। इजरायल नरेश ट्रंप चुनाव की मतगणना के शुरुआती आंकड़ों में नेतन्याहू के समर्थक खेमे को 57 सीटों पर बढ़त मिली है, जबकि उनके विरोधी खेमे को 47 सीटें मिली हैं। ट्रंप ने बुधवार को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्थ सोशल पर एक पोस्ट साझा की। दावा किया कि नेतन्याहू के समर्थन में अमेरिकी राष्ट्रपति की घोषणा के बाद चुनावी माहौल बदल गया। पहले निर्णायक हार की आशंका जताई जा रही थी, लेकिन अब मुकाबला बराबरी का हो गया है या वह जीत भी सकते हैं। इर्विंग सी. श्वार्ट्ज को कोट (हवाले से) करते हुए अपनी पीठ थपथपाई। लिखा, 'जब राष्ट्रपति ट्रंप ने बीबी नेतन्याहू का समर्थन किया, तो पूरी स्थिति ही बदल गई। अब, एक महान प्रधानमंत्री की करारी हार के बजाय, ऐसा लग रहा है कि नेतन्याहू ने बराबरी की स्थिति हासिल कर ली है, या शायद यह उनके लिए एक जीत ही है! यह सब राष्ट्रपति ट्रंप के समर्थन के बाद हुआ, जो केवल मध्य पूर्व, इजरायल और संयुक्त राज्य अमेरिका के भले के लिए काम करना चाहते हैं!'

ट्रंप पर स्विस मॉडल ने रेप का आरोप लगाया :कहा- वीजा दिलाते के बहाने होटल में बुलाया था

बर्न , एजेंसी। स्विट्जरलैंड की पूर्व मॉडल बीट्रिस वर्युल ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप पर रेप का आरोप लगाया है। उसने कहा कि 1993 में न्यूयॉर्क के प्लाजा होटल में ट्रंप ने उनके साथ रेप किया था।व्यूल ने बताया कि घटना के बाद उनके शरीर के कई हिस्सों से खून बह रहा था और चोट के निशान पड़ गए थे। यह दावा अमेरिकी संसद में डेमोक्रेटिक सदस्यों की ओर से जारी एक नई रिपोर्ट में किया गया है। व्यूल ने 2024 में ट्रंप पर यौन शोषण का आरोप लगाया था। तब उन्होंने कहा था कि 1993 में ट्रंप ने उन्हें जबरन पकड़ा, चूसा और उनके कपड़े उतारने की कोशिश की थी। अब नई रिपोर्ट में व्यूल ने समिति के कर्मचारियों को बताया कि उस घटना में ट्रंप ने उनके साथ रेप किया था। व्यूल स्विट्जरलैंड की मॉडल और पूर्व मिस स्विट्जरलैंड हैं। उनके मुताबिक, 1993 में वह अमेरिकन ड्रीम पोजेंट में हिस्सा लेने अमेरिका आई थीं। इस प्रतियोगिता की ट्रंप के साथ साझेदारी थी। कार्यक्रम के दौरान मैनेटन के प्लाजा होटल में पत्रकारों के साथ दोपहर के भोजन के समय उनकी ट्रंप से मुलाकात हुई। व्यूल ने बताया कि इसके बाद ट्रंप के एक सहयोगी ने उन्हें होटल के कमरे में मिलने के लिए बुलाया। उन्हें लगा था कि वह बातचीत होगी लेकिन उनके आरोप के मुताबिक, कमरे में ट्रंप ने पीछे से उन्हें पकड़ लिया और जबरन रेप किया।

कोलंबिया में वेनेजुएला सीमा के पास धमाका, चार पुलिसकर्मी घायल

बोगोटा, एजेंसी। कोलंबिया और वेनेजुएला की सीमा को जोड़ने वाले एक पुल के पास मंगलवार को बम धमाका हुआ, जिसमें कम से कम चार पुलिसकर्मी घायल हो गए। नॉर्ट डी सैंटेडर प्रांत के गवर्नर विलियम विलामिजार ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर बताया कि पुलिस हमले के लिए जिम्मेदार लोगों का पता लगाने में जुटी है। धमाका फ्रांसिस्को डी पाउला डी सैंटेडर अंतरराष्ट्रीय पुल के पास कोलंबिया की कर संग्रह एजेंसी के स्थानीय कार्यालय के सामने हुआ। घटनास्थल के वीडियो में धमाके से क्षतिग्रस्त एक ट्रक और कई मोटरसाइकिलें दिखाई दीं। यह हमला ऐसे समय हुआ है, जब कोलंबिया की रूढ़िवादी सरकार देश की सुरक्षा रणनीति में बदलाव कर रही है और आपराधिक गिरोहों तथा विद्रोही समूहों के खिलाफ अधिक सख्त रुख अपना रही है। अगरस्त में राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के बाद अबेलार्डो डी ला एंस्पराला ने देश में सक्रिय बचे हुए विद्रोही समूहों के साथ शांति वार्ता रद्द कर दी थी। उनका कहना था कि पिछले चार वर्षों में बातचीत से बहुत कम नतीजे निकले। उन्होंने आरोप लगाया कि सशस्त्र समूहों ने सरकार के साथ हुए संघर्षविराम का इस्तेमाल ग्रामीण इलाकों में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए किया।

दी। यूएई के नेतृत्व ने चालक दल की त्वरित कार्रवाई, जिम्मेदारी और व्यावसायिक दक्षता की सराहना करते हुए कहा, 'यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना देश की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। राष्ट्रपति ने चालक दल के सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान यूएई के उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और दुबई के शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

यह सम्मान 30 सितंबर को फ्लाईदुबई की उड़ान एफजेड 1073 में हुई घटना के बाद प्रदान किया। दुबई मीडिया ऑफिस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इसकी जानकारी

यूएन महासभा को क्यूबा के विदेश मंत्री ने किया बाधित, अमेरिकी प्रतिनिधि से हुई तीखी बहस

न्यूयॉर्क, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासभा में अमेरिका और क्यूबा के बीच लंबे समय से जारी तनाव मंगलवार को तीखी जुबानी भिड़ंत में बदल गया। अमेरिकी प्रतिनिधि माइक वॉल्ट्ज और क्यूबा के विदेश मंत्री बुनो रोड्रिगेज पारिता के बीच जबरदस्त बहस हुई, जब महासभा में क्यूबा पर अमेरिकी आर्थिक प्रतिबंधों पर चर्चा चल रही थी। असेंबली अध्यक्ष खलीलुर रहमान ने शांति बनाए रखने की अपील की, क्यूबाई प्रतिनिधियों से अपनी सीटों पर वापस जाने और मंगलवार को वाल्ट्ज को अपनी बात रखने देने को कहा, और कुछ देर के लिए बैठक स्थगित कर दी। जब वाल्ट्ज हवाना सरकार की आलोचना कर रहे थे, तो क्यूबाई प्रतिनिधिमंडल ने अपनी मेजें थपथपाई और शोर मचाना शुरू कर दिया। वे अपनी सीटों से उठे और मंच की ओर बढ़ गए। वॉल्ट्ज ने अपने संबोधन में क्यूबा की सरकार पर भ्रष्टाचार और आम नागरिकों की कीमत पर सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग को, लाभ पहुंचाने का आरोप लगाया। उन्होंने क्यूबा के नेतृत्व की कथित संपत्ति और विलासितापूर्ण जीवनशैली का जिक्र करते हुए सदस्य देशों से अमेरिकी प्रतिबंधों की निंदा करने वाले प्रस्ताव का समर्थन नहीं करने की अपील की। इस दौरान रोड्रिगेज ने वाल्ट्ज की बात में बार-बार रुकावट डाली और 'पाइंट ऑफ ऑर्डर' पर बोलने की मांग की।



इसके बाद दोनों एक-दूसरे को घूरने लगे। वाल्ट्ज मंच से बोल रहे थे, जबकि रोड्रिगेज और उनके साथी मंच के नीचे सामने की तरफ मौजूद थे। रहमान ने 'पाइंट ऑफ ऑर्डर' उठाते हुए आग्रह किया, 'क्यूबा कामकाज को सुचारू रूप से चलाने में मेरी मदद करें, और आपको यह अधिकार मिल जाएगा।' वाल्ट्ज ने रोड्रिगेज पर चिल्लाते हुए कहा, 'पीछे हट जाओ! यह हवाना नहीं है।' इस बीच, रहमान ने कहा, 'क्यूबा बैठ जाएगा, बैठ जाएगा,' और फिर बैठक को स्थगित कर दिया। उन्होंने कहा, 'मैं यहां प्रक्रिया के नियमों को निष्पक्ष और स्वतंत्र तरीके से लागू करने के लिए हूं। कुछ ही मिनटों में जब बैठक फिर से शुरू हुई, तो रोड्रिगेज ने 'पाइंट ऑफ ऑर्डर' उठाया। असल में यह एक जवाब था, जिसमें उन्होंने कहा कि वाल्ट्ज 'संसार झूठ बोल रहे हैं' और 'क्यूबा की जनता तथा सरकार की गरिमा को ठेस पहुंचा रहे हैं'। इस दौरान क्यूबा के प्रतिनिधिमंडल ने

उनके संबोधन का विरोध किया और मेज थपथपाकर आपत्ति जताई। स्थिति तब और तनावपूर्ण हो गई, जब विदेश मंत्री रोड्रिगेज वॉल्ट्ज के मंच के करीब पहुंचे और उन्हें झुठ करार दिया। इस पर अमेरिकी राजदूत ने उन्हें पीछे हटने को कहा। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों ने हस्तक्षेप कर सदनों में तनाव कम करने की कोशिश की। जब वाल्ट्ज ने अपना भाषण फिर से शुरू किया, तो उन्होंने कहा कि रोड्रिगेज ने कैमरों और राजदूतों के सामने उन्हें चुप कराने की कोशिश की थी, लेकिन 'सोचिए कि अगर कोई इस शासन की कठोरता के बीच बोलने की हिम्मत करे, तो क्या होगा।' उन्होंने कुछ तस्वीरें दिखाईं, जिनके बारे में उनका कहना था कि उनमें 'कास्त्रो' 40,000 डॉलर की कीमत वाली दो रोलेक्स घड़ियां पहने हुए हैं। संभवतः वे पूर्व और 'क्यूबा की जनता तथा सरकार की गरिमा को ठेस पहुंचा रहे हैं'। इस फिदेल कास्त्रो के भाई हैं। असेंबली

में एक प्रस्ताव पर चर्चा हो रही थी, जिस पर बुधवार को मतदान होना है। इस प्रस्ताव में क्यूबा पर लगे अमेरिकी प्रतिबंधों को खत्म करने की मांग की गई है। हाल के महीनों में तेल की नाकेबंदी के साथ ये प्रतिबंध और भी कड़े कर दिए गए हैं। बोलने वाले अधिकांश देशों ने वाशिंगटन के प्रतिबंधों का विरोध किया और क्यूबा का समर्थन किया।

गुटिनरेपेक्ष आंदोलन (नॉन-अलाइन्ड मूवमेंट) की ओर से बोलते हुए, युगांडा के स्थायी प्रतिनिधि एडोनिया अयेबारे ने कहा कि उनका समूह 'इस साल अमेरिकी सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को लेकर गहरी चिंता जताता है, जिन्होंने (प्रतिबंधों) को अत्यधिक कठोर स्तर तक बढ़ा दिया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा क्यूबा पर हमले की योजना बनाने की अफवाहों के बीच, उन्होंने कहा, 'गुटिनरेपेक्ष आंदोलन, संयुक्त राष्ट्र के सबसे प्रतिनिधि निकाय के रूप में, महासभा से आग्रह कर रहा है कि वह क्यूबा के खिलाफ सैन्य आक्रामकता को रोकने के लिए प्रयास करे। क्यूबा गुटिनरेपेक्ष आंदोलन का एक संस्थापक सदस्य है, और शांति बनाए रखना जरूरी है।

आसियान की ओर से बोलते हुए, सिंगापुर के स्थायी प्रतिनिधि बुरहान गफूर ने कहा कि उनका संगठन 'क्यूबा के लोगों पर इन प्रतिबंधों के असर को लेकर विशेष रूप से चिंतित है।

ब्राजील चुनाव में हार के बाद बोल्सोनारो ने देश छोड़ा, लूला ने बताया 'शर्मनाक'

रियो डी जेनेरो, एजेंसी। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने मंगलवार को चुनाव के बाद देश छोड़ने के लिए हारे हुए राष्ट्रपति उर्मोदवार फ्लेवियो बोल्सोनारो की आलोचना की और इस कदम को 'शर्मनाक' बताया. शिन्हुआ न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक लूला ने अपने 81वें जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए ब्रासीलिया में राष्ट्रपति निवास, अल्बोराडा पैलेस के बाहर इकट्ठा हुए समर्थकों से कहा, 'मुझे अफसोस है कि उन्होंने ब्राजील छोड़ दिया और ब्राजील छोड़ने का उनका फैसला शर्मनाक है.'

लिबरल पार्टी के फेडरल सांसद मोरिसियो मार्कोन ने मंगलवार को कहा कि फ्लेवियो बोल्सोनारो ब्राजील छोड़कर अमेरिका जा रहे हैं. ब्राजील के सुप्रीम फेडरल कोर्ट ने सोमवार को फ्लेवियो बोल्सोनारो के देश छोड़ने पर रोक लगा दी. ब्राजील की मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह न्यायिक आदेश कोर्ट की मनी-लॉन्डिंग जांच से जुड़ा है. इसमें बोल्सोनारो



और वकील विलर टोमाज दोनों जांच के दायरे में हैं. बोल्सोनारो के देश छोड़ने की अभी तक आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है. ब्राजील की मीडिया ने बताया कि देश के इमिग्रेशन कंट्रोल सिस्टम में ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं था जिससे पता चले कि वह रेगुलर बॉर्डर कंट्रोल के जरिए ब्राजील से बाहर गया था. फेडरल पुलिस इस बात की जांच कर रही थी कि वह देश छोड़कर गया या नहीं और कैसे गया. ब्राजील के सुप्रीम फेडरल कोर्ट के जज ने फ्लेवियो बोल्सोनारो को पासपोर्ट सैंडर करने का आदेश दिया और उनके

देश छोड़ने पर रोक लगा दी. ब्राजील की पब्लिक न्यूज एजेंसी एजेंसिया ब्रासिल के मुताबिक यह सीक्रेट फ़ैसला बोल्सोनारो और वकील विलर टोमाज से जुड़ी एक जांच का हिस्सा है. ब्राजील की मीडिया ने बताया कि मोरेस ने बोल्सोनारो को टोमाज से कॉन्टैक्ट करने से भी मना किया है. मनी लॉन्डिंग और गैर-कानूनी फ़ारेन एक्सचेंज ट्रांजेक्शन के शक में फेडरल पुलिस दोनों लोगों की जांच कर रही है. रविवार को हुए प्रेसिडेंशियल रनऑफ में लूला ने बोल्सोनारो को हराया उन्हें 51.79 फीसदी वैंध वोट मिले, जबकि

बोल्सोनारो को 48.21 प्रतिशत वोट मिले. 45 साल के बोल्सोनारो, पूर्व प्रेसिडेंट जेयर बोल्सोनारो के सबसे बड़े बेटे हैं और 2019 से सीनेटर के तौर पर काम कर रहे हैं. अमेरिकी मीडिया ने एक सीनियर डिपार्टमेंट अधिकारी के हवाले से बताया कि अमेरिकी विदेश मंत्रालय वहां हुए ब्राजील के प्रेसिडेंशियल कैंडिडेट फ्लेवियो बोल्सोनारो और उनके परिवार को वीजा जारी करेगा. उन्हें अमेरिका में एंट्री देगा. ब्राजील के प्रेसिडेंट लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने मंगलवार को चुनाव के बाद देश छोड़ने के लिए बोल्सोनारो की आलोचना की और इस कदम को शर्मनाक बताया. शिन्हुआ न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक लूला ने ब्रासीलिया में प्रेसिडेंशियल रेंजिडेंस, अल्बोराडा पैलेस के बाहर अपने 81वें जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए इकट्ठा हुए सपोर्टर्स से कहा, 'मुझे अफसोस है कि उन्होंने ब्राजील छोड़ दिया और ब्राजील छोड़ने का उनका फैसला शर्मनाक है।

न्यूयॉर्क अटॉर्नी जनरल चुनाव में बढ़ी हलचल, क्या लेटिशिया जेम्स को टक्कर दे पाएंगी भारतीय मूल की सरिता कोमाटिरेड्डी?

न्यूयॉर्क, एजेंसी। भारतीय मूल की अमेरिकी रिपब्लिकन सरिता कोमाटिरेड्डी न्यूयॉर्क की एक बेहद हाई-प्रोफाइल राजनीतिक लड़ाई में उतर चुकी हैं. वह 3 नवंबर को होने वाले अटॉर्नी जनरल के चुनाव में मौजूद डेमोक्रेटिक अटॉर्नी जनरल लेटिशिया जेम्स को टक्कर दे रही हैं. सरिता एक पूर्व संघीय अभियोजक (फेडरल प्रोसिय्यूटर) हैं, जिन्हें आतंकवाद, साइबर क्राइम, मनी लॉन्डिंग और कई अन्य जटिल मामलों को संभालने का 10 साल से ज्यादा का अनुभव है. वह अपने इसी कानून-व्यवस्था के रिकॉर्ड को अपने चुनाव प्रचार का सबसे मुख्य हिस्सा बना रही हैं. सरिता (उम्र 42 वर्ष) ने फरवरी 2026 में न्यूयॉर्क के अटॉर्नी जनरल पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी का नामांकन हासिल किया था. उनका पूरा अभियान कानून और व्यवस्था के संदेश पर टिका है, जो न्यूयॉर्क में एक संघीय अभियोजक के रूप में उनके वर्षों के अनुभव और जिस पर 11 सितंबर 2001 (9/11) के आतंकवादी हमलों का गहरा असर पड़ा था. सरिता कोमाटिरेड्डी का कहना है कि 9/11 के आतंकवादी हमलों ने ही उन्हें लॉ में करियर बनाने का फैसला लेने के लिए प्रेरित किया. ये हमले न्यूयॉर्क में हुए थे, जहां उनका जन्म हुआ था और जहां बाद में उन्होंने देश के कुछ सबसे गंभीर अपराधों के खिलाफ



मामले दर्ज करने में 10 साल से ज्यादा का समय बिताया. न्यूयॉर्क के इंस्टीट्यूट में एक असिस्टेंट यूएस अटॉर्नी के रूप में, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, साइबर अपराध, नशीले पदार्थों की तस्करी, मनी लॉन्डिंग, धोखाधड़ी और विदेशी सार्वजनिक भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों पर काम किया. वह राष्ट्रीय सुरक्षा और साइबर अपराध विभाग की एक सीनियर सदस्य बनीं और उन्होंने कई नेतृत्व वाली भूमिकाएं निभाईं, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय नशीले पदार्थ और मनी लॉन्डिंग विभाग की प्रमुख, उनकी कंपनी की वेबसाइट पर मौजूद प्रोफाइल के अनुसार, उनके काम में निर्यात नियंत्रण, आर्थिक प्रतिबंध, हिंसक गिरोह और अन्य जटिल आपराधिक जांचें भी शामिल थीं. एक संघीय अभियोजक के रूप में अपने समय के दौरान, सरिता ने 8 जूरी मुकदमों का संचालन किया और यूएस कोर्ट ऑफ अपील्स के सामने 15 अपीलों पर बहस की. एक भारतीय अव्रासी की बेटी से लेकर एक संघीय अभियोजक और वरिष्ठ कानून प्रवर्तन अधिकारी बनने तक का सरिता का सफर अब उन्हें चुनावी राजनीति में ले आया है।

भारतीय पायलट कैप्टन रश्मि मच्छर को यूएई ने दिया ऑर्डर ऑफ जायद सम्मान

अबू धाबी, एजेंसी। फ्लाईदुबई फ्लाइट को हाइजैक होने से बचाने के लिए जान की बाजी लगाने को तैयार भारतीय पायलट कैप्टन रश्मि मच्छर को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने सर्वोच्च सम्मान से नवाजा है। राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने मच्छर समेत विमान के अन्य चालक दल सदस्यों को प्रथम श्रेणी के 'ऑर्डर ऑफ जायद 2' से सम्मानित किया है। दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हमदान बिन मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम ने चालक दल को यह सम्मान प्रदान किया। दुबई मीडिया ऑफिस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इसकी जानकारी

दी। यूएई के नेतृत्व ने चालक दल की त्वरित कार्रवाई, जिम्मेदारी और व्यावसायिक दक्षता की सराहना करते हुए कहा, 'यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना देश की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। राष्ट्रपति ने चालक दल के सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान यूएई के उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और दुबई के शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

यह सम्मान 30 सितंबर को फ्लाईदुबई की उड़ान एफजेड 1073 में हुई घटना के बाद प्रदान किया। दुबई मीडिया ऑफिस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इसकी जानकारी



हमला कर दिया था और विमान का निरंतरण अपने हाथ में लेने की कोशिश की थी। यूएई के अभियोजकों की जांच के अनुसार, आरोपी की मंशा विमान के इजरायल के बेन गुरियन हवाई अड्डे पर दुर्घटनाग्रस्त कर बड़े पैमाने पर जानमाल का नुकसान पहुंचाने की थी। गंभीर रूप से

घायल होने के बावजूद कैप्टन मच्छर ने कॉकपिट का दरवाजा खोलने में सफलता हासिल की। इसके बाद चालक दल के अन्य सदस्यों और यात्रियों ने हस्तक्षेप कर हमलावर को काबू में किया। विमान को सऊदी अरब के तबुक हवाई अड्डे की ओर मोड़ा गया, जहां उसे सुरक्षित उतारा गया। इस

घटना में विमान में सवार यात्रियों और चालक दल के सदस्यों की जान बच गई। घटना के बाद शेख हमदान ने अस्पताल में कैप्टन मच्छर से मुलाकात कर उनके साहस और मानव जीवन की रक्षा के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना की थी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और इजरायल के प्रधानमंत्री बेजाकिन नेतन्याहू ने भी उनकी बहादुरी की प्रशंसा की थी। इजरायल के राष्ट्रपति इसाक Herzog ने भी कैप्टन मच्छर को स्वस्थ होने के बाद देश के नागरिक वीरता सम्मान से सम्मानित करने की घोषणा की है।

को-पायलट ने कुल्हाड़ी से हमला किया था : 30 सितंबर को फ्लाईदुबई की फ्लाइट

एफजेड1073 दुबई से तेल अवीव जा रही थी। इसी दौरान विमान के को-पायलट ने कॉकपिट में कैप्टन मच्छर पर हमला कर दिया। हमले में कैप्टन घायल हो गए। उन्होंने बताया था कि को-पायलट ने सिर पर कई वार किए। को-पायलट ने विमान को गिराने की कोशिश में कैप्टन पर कॉकपिट में ही मौजूद इमरजेंसी कुल्हाड़ी से हमला किया था। इस दौरान मच्छर ने विमान से हाईजैक का संकेत भी भेजा था। हमले के दौरान कैप्टन मच्छर ने किसी तरह का फैसला लेने का दरवाजा खोला। इसके बाद विमान में मौजूद यात्रियों और कू ने अंदर पहुंचकर हमलावर को काबू किया।

छह राज्यों में 1600 संदिग्ध विदेशी नागरिक मिले, मतदाता सूची से हटाए जाएंगे नाम

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से मतदाता सूची की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए चलाए जा रहे सिस्टमैटिक आइडेंटिफिकेशन एंड रिव्यू (एसआईआर) अभियान के तहत एक अहम जानकारी सामने आई है। इस अभियान के तहत छह राज्यों में करीब 1600 संदिग्ध विदेशी नागरिकों की पहचान की गई है, जिनके नाम मतदाता सूची से हटाए जाने हैं। एसआईआर का काम इन छह राज्यों में पूरा हो चुका है और कुछ अन्य राज्यों में यह प्रक्रिया अभी भी जारी है। यह कदम मतदाता सूची की अखंडता को बनाए रखने और यह तय करने के लिए अहम है कि केवल पात्र भारतीय नागरिक ही मतदान कर सकें। एक रिपोर्ट के मुताबिक जिन 1,600 संदिग्ध विदेशी नागरिकों की पहचान की गई है, उनकी संख्या इन छह राज्यों के कुल मतदाताओं की संख्या के मुकाबले बहुत कम है। इन छह राज्यों में रहने वाले मतदाताओं की कुल संख्या 9.86 करोड़ है, जिससे पता चलता है कि यह अभियान बड़े पैमाने पर नहीं, बल्कि लक्षित रूप से त्रुटियों को सुधारने पर केंद्रित है। यह निर्वाचन आयोग की निरंतर कोशिशों का हिस्सा है ताकि मतदाता सूची में किसी भी प्रकार की अनियमितता या अपात्र व्यक्ति के नाम को समाप्त किया जा सके।

बाबा सिद्दीकी हत्याकांड-मुंबई पुलिस पर दिखावे की कार्रवाई का आरोप

मुंबई। एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के मामले में उनकी पत्नी शहजीन सिद्दीकी ने मुंबई पुलिस पर गंभीर आरोप लगा दिए हैं। उनका कहना है कि पुलिस केवल दिखावे की कार्रवाई कर रही है और अपनी मनमानी छिपाने के लिए प्रशासनिक अडचनों का सहारा ले रही है। शहजीन के वकील त्रिवनकुमार करनानी ने कहा कि मुंबई पुलिस जानबूझकर अदालती आदेशों के बावजूद जेल में पृच्छाछा या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हिरासत सुनिश्चित करने जैसे आवश्यक कदम नहीं उठा रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि यह प्रशासनिक देरी हत्या के मामले की सुनवाई को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है, खासकर तब जब पुलिस को प्रक्रियागत विकल्पों की जानकारी है। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री बाबा सिद्दीकी की 12 अक्टूबर 2024 को मुंबई के बांद्रा ईस्ट इलाके में उनके बेटे के कार्यालय के बाहर तीन हमलावरों ने गोली बारक हत्या कर दी थी। इस हत्याकांड में गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का नाम सामने आया था, और मुंबई पुलिस ने अपनी चांजगीट में लॉरेंस के भाई अनमोल बिश्नोई को वांछित आरोपी के रूप में चिन्हित किया है। ये आरोप तब सामने आए हैं, जब मुंबई पुलिस पर बॉलीवुड अभिनेता टाइगर श्रॉफ की कार पर हुए हालिया हमले के बाद भी सवाल उठ रहे हैं। 18 सितंबर को जुहू में हुए इस हमले में टाइगर के ड्राइवर और एक अन्य व्यक्ति घायल हुए हैं, और घटना में भी लॉरेंस बिश्नोई का कनेक्शन उजागर हुआ था। सिद्दीकी की पत्नी के आरोप मौजूदा स्थिति में पुलिस की कार्यप्रणाली पर और दबाव बढ़ा रहे हैं।

सऊदी अरब में उमरा करने गए हजारों जायरीन फंसे

नई दिल्ली। सऊदी अरब में उमरा करने गए चार हजार से अधिक भारतीय जायरीन उड़ानों के प्रभावित होने से फंस गए हैं। 18 अक्टूबर को रियाद के किंग खालिद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हुए हमलों के बाद उनकी वापसी मुश्किल हो गई है। कई जायरीन मक्का-मदीना के अलावा जेद्दा और उम्मायम में फंसे हैं। उनके पास पैसे और नियमित दवाइयां खत्म होने लगी हैं, जिससे परेशानियां बढ़ रही हैं। होटल और खाने-पीने की खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। भारतीय दूतावास और एयरलाइंस की ओर से यात्रियों की मदद के प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ यात्रियों को होटल और भोजन उपलब्ध कराया गया है, लेकिन सभी के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं हो पा रही है। कई जायरीन एक ही कमरे में 10 से 15 लोगों के साथ रहने को मजबूर हैं। बुजुर्गों और बीमार यात्रियों की स्थिति अधिक चिंताजनक है।

सीएम चौधरी की लोकतंत्र बचाओ पदयात्रा पर तेजस्वी का पलटवार... “चोर सबसे ज्यादा शोर मचा रहे

पटना, एजेंसी। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पटना में लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ पदयात्रा का नेतृत्व किया। यह पदयात्रा कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष द्वारा लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ फैलाए जा रहे कथित भ्रामक विमर्श का मुकाबला करने के उद्देश्य से निकाली गई। हालांकि, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने पहल को पाखंड करार देकर पलटवार कर कहा कि जो लोग लोकतंत्र को कुचलते हैं, वे ही फजी कवायद कर रहे हैं। पटना के गांधी मैदान के पास कारगिल चौक से शुरू होकर लोकनाथक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा के निकट समाप्त हुई इस पदयात्रा से पहले मुख्यमंत्री चौधरी ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कमजोर करने और देश भर में अराजकता फैलाने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन ये प्रयास सफल नहीं होने वाले हैं। उन्होंने इस लोकतांत्रिक संस्थाओं की रक्षा के लिए भाजपा के देशव्यापी कार्यक्रम का हिस्सा बताया। सीएम चौधरी ने कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकारों पर चुनावी गड़बड़ियों, बूथ लूटने और सत्ता के दुरुपयोग का आरोप लगाया। उन्होंने 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए

पीएम मोदी के तंज पर कांग्रेस का जवाब... नागपुर और वाराणसी पर चुप्पी क्यों?

कांग्रेस की मांग बैलेट का समर्थन करते हैं तब बैलेट से हो चुनाव

नई दिल्ली , एजेंसी। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस बयान पर पलटवार किया, जिसमें उन्होंने विधान परिषद चुनावों में पार्टी के प्रदर्शन पर तंज कसा था। कांग्रेस ने नागपुर और वाराणसी में विपक्ष की जीत का हवाला देकर भाजपा के चुनावी दबदबे के दावों पर सवाल उठाया और प्रधानमंत्री मोदी को अपने ही संसदीय क्षेत्र के परिणामों पर घेरा। यह पलटवार तब आया जब प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और कर्नाटक में हुए विधान परिषद (एमएलसी) चुनावों में कांग्रेस के एक भी सीट न जीत पाने पर तंज कसा था, जबकि इन चुनावों में मतदान बैलेट पेपर के जरिए हुआ था।

प्रधानमंत्री मोदी ने पोस्ट किया था, 4 बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और कर्नाटक में 28 सीटों पर एमएलसी चुनाव हुए। ये चुनाव बैलेट पेपर के



जरिए कराए गए। अंदाजा लगाइए कि कांग्रेस ने कितनी सीटें जीतीं? उन्होंने विपक्ष की बैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग के बीच कांग्रेस के खराब प्रदर्शन को दिखाया। वहीं, कांग्रेस ने अपना ध्यान भाजपा को मिली हार की ओर मोड़ने की कोशिश की। इसमें खास तौर पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का गृह नगर नागपुर, और प्रधानमंत्री

मोदी का संसदीय क्षेत्र वाराणसी शामिल हैं। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने प्रधानमंत्री के बयानों पर सवाल उठकर 2024 लोकसभा चुनाव के वाराणसी परिणाम का जिक्र किया। श्रीनेत ने कहा कि प्रधानमंत्री मतपत्रों (बैलेट पेपर) की बात कर रहे हैं। पहले उन्हें यह बताना चाहिए कि जब चुनाव पेपर बैलेट से होते थे, तब वे अपने ही

संसदीय क्षेत्र वाराणसी में कैसे हार गए थे? उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री पिछला चुनाव एक साजिश के जरिए जीते थे और चेतावनी दी कि मैं प्रधानमंत्री से कहना चाहती हूँ कि वाराणसी जाने की गलती न करें, वरना आप हार जाएंगे।

कांग्रेस सांसद पवन खेड़ा ने प्रधानमंत्री मोदी को चुनौती दी कि वे भविष्य के चुनावों में पेपर बैलेट की मांग का समर्थन करें। खेड़ा ने कहा, अगर प्रधानमंत्री को पेपर बैलेट पर इतना ही भरोसा है कि वे इसका समर्थन कर रहे हैं, यही हमारी भी मांग है। इसलिए, आने वाले सभी चुनाव पेपर बैलेट से होने चाहिए। साथ ही, उन्होंने सवाल उठाया कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने बयानों में वाराणसी के नतीजों का जिक्र क्यों नहीं किया।

मंदिर प्रवेश पर मद्रास हाईकोर्ट का सख्त रुख: गैर-हिंदुओं को श्रद्धा अनिवार्य



किया था। अदालत ने उनके कथित बयान पर आपत्ति जाहिर की, जिसमें सनातन धर्म को खत्म करने की बात कही गई थी, और कहा कि मंदिरों की परंपराओं को राजनीतिक चापलूसी के आगे नहीं झुकाया जा सकता। अदालत ने तिरुवन्नामलाई के अरुणाचलेश्वर मंदिर में टोपी पहने कुछ लोगों के विरोध के बावजूद प्रवेश करने के वायरल वीडियो का उल्लेख किया, जिस पर मंदिर प्रशासन की भूमिका पर सवाल उठे।

सुप्रीम कोर्ट का घरेलू हिंसा में महिलाओं को संरक्षण - महिलाओं को संयुक्त घर से बेदखल करने पर रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने घरेलू हिंसा के मामलों में महिलाओं के अधिकारों को लेकर महत्वपूर्ण दिप्टिणी की है। अदालत ने स्पष्ट किया कि केवल पति के घर में मौजूद न होने के आधार पर पत्नी और उसकी महिला रिश्तेदारों को साझा घर से बेदखल नहीं किया जा सकता। जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस विभुल एम. पांचोली की पीठ ने घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 के प्रावधानों की व्याख्या करते हुए यह बात कही। अदालत के अनुसार, पति की गैर-मौजूदगी में भी महिला रिश्तेदारों को बेदखल करना कानून के तहत उचित नहीं है। साझा घर से प्रतिवादी को हटाने का आदेश देने के मामले में महिलाओं के संरक्षण को ध्यान में रखना आवश्यक है। हालांकि, अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि इस संरक्षण का अर्थ घरेलू हिंसा से पीड़ित महिला के कानूनी अधिकारों को समाप्त करना नहीं है। यह फैसला महिलाओं के आवास संबंधी अधिकारों की रक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

अरुणाचल में सियांग बांध पर उबाल: चीन को मात देने की योजना का लोकल विरोध

नई दिल्ली , एजेंसी। नई दिल्ली (ईएमएस)। अरुणाचल प्रदेश का पासीघाट शहर और पूरा पूर्वी सियांग जिला इन दिनों केंद्रीय सशस्त्र बल (सीएपीएफ) की भारी तैनाती के साथ उबल रहा है। बीते 15 दिनों से राज्य के तीन जिलों में हो रहे हिंसक विरोध-प्रदर्शनों की वजह सियांग घाटी में प्रस्तावित एक मेगा बांध परियोजना है। दरअसल, भारत सियांग नदी पर 11,200 मेगावाट का विशाल बांध और जलाशय बनाने की तैयारी में है। इसका मुख्य उद्देश्य चीन की उस महत्वाकांक्षी परियोजना का मुकाबला करना है, जिसके तहत वह नदी के ऊपरी हिस्से में 60,000 मेगावाट की जलविद्युत परियोजना विकसित करने की तैयारी में है। यह नदी तिब्बत से निकलकर चीन और फिर अरुणाचल प्रदेश में सियांग के रास्ते भारत में

आती है, और बाद में असम में ब्रह्मपुत्र के नाम से जानी जाती है। केंद्र सरकार का अनुमान है कि चीन इस नदी का करीब 40 अरब क्यूबिक मीटर पानी मोड़ सकता है। इसी के जवाब में, नई दिल्ली ने सियांग अपर मल्टीपर्पज प्रोजेक्ट (एसयूपएमपी) की योजना बनाई है, जो कि नेशनल हाइड्रो पावर कॉरपोरेशन (एनएचपीसी) क्रियान्वित कर रहा है। हालांकि, रणनीतिक योजना ने सियांग घाटी में बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शनों को जन्म दिया है, जिसमें अधिकांशतः जेन जेड पीढ़ी के युवा शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों की मुख्य चिंता यह है कि प्रस्तावित बांध और जलाशय से राज्य के 32 गांव पानी में डूब जाएंगे। 23 अक्टूबर को स्थिति उस समय हिंसक हो गई, जब परियोजना को रद्द करने की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों ने एनएचपीसी के कार्यालय और

पुलिस वाहनों में आग लगा दी। उन्होंने दो विधायकों और राज्य भाजपा प्रमुख के आवासों में भी तोड़फोड़ और लूटपाट की। इन घटनाओं के बाद लगभग 10 पुलिस केस दर्ज किए गए हैं और 26 से अधिक प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया गया है। हिंसा और बढ़ते तनाव पर चिंता व्यक्त कर अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने प्रदर्शनकारियों से बातचीत करने का प्रस्ताव रखा है। उन्होंने लिखा कि सियांग अपर मल्टीपर्पज प्रोजेक्ट को लेकर फैली गलत जानकारी और गलतफहमियों को दूर करने के लिए तथ्यों, पारदर्शिता और खुली बातचीत बहुत जरूरी है। राज्य सरकार का कहना है कि प्री-फिजिबिलिटी रिपोर्ट पर काम केवल एक तकनीकी आकलन है, न कि बांध बनाने की अंतिम मंजूरी। सुबनसिरी अपर हाइडल



प्रोजेक्ट (एसयूपएमपी) जैसे अन्य मेगा डैम के साथ-साथ 11,200 मेगावाट का यह सियांग अपर मल्टीपर्पज प्रोजेक्ट भारत के लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह

अरुणाचल में चीन की ऊपरी बहाव वाली भारी-भरकम गतिविधियों का मुकाबला करने और आवश्यक बुनियादी ढांचा तैयार करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

करवा-चौथ पर मेहंदी

लगाकर व्रत रखकर प्रदर्शन करने सड़क पर उतरी नर्सें

लखनऊ, एजेंसी। आज यानी गुरुवार को नर्सों ने दो घंटे कार्य बहिष्कार कर विरोध प्रदर्शन किया। हाथों में मेहंदी लगाकर और दुर्हनन की तरह सज-संवरकर महिलाएं प्रदर्शन करने पहुंचीं। इस दौरान उन्होंने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और वादाखिलाफी का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारी नर्सों ने हाथों में चल्नी लेकर अपनी मांगों को रखा। उनका यह प्रर्शन करवा चौथ पर चांद देखने की परंपरा से जुड़ा था। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक रावकीय नर्सें संघ यूपी के महामंत्री ने कहा कि आज यह प्रदर्शन बलरामपुर अस्पताल समेत प्रदेश के सभी अस्पतालों में हो रहा है। उन्होंने बताया कि एक साल पहले इसी अस्पताल के प्रांगण में सीएम योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने हमारी मांगों को पूरा करने का वाद किया था मगर अभी तक पूरा नहीं किया है। प्रदेश के मुखिया और स्वास्थ्य विभाग के मुखिया के द्वारा किया गया वादा पूरा नहीं होगा तो किसी और पर क्या भरोसा करें।

आतंकवाद छोड़े पाकिस्तान तभी होगी बात: खुद पाकिस्तानी विशेषज्ञ ने कहा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत द्वारा नई दिल्ली में आयोजित होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सिलिलाइजेशनल डायलॉग फोरम में पाकिस्तान को भेज निमंत्रण ने दोनों देशों के बीच संभावित बातचीत की अटकलों को तेज किया है। हालांकि, पाकिस्तानी विशेषज्ञ ने अपने ही देश की पोल खोलकर साफ कहा है कि भारत तब तक इस्लामाबाद से कोई वार्ता नहीं करेगा, जब तक वह आतंकवाद के मुद्दे पर गंभीर रुख नहीं दिखाता है।

पाकिस्तानी पत्रकार के यूट्यूब चैनल पर जानकार शकील चौधरी ने स्पष्ट किया कि नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच बातचीत की संभावना बहुत कम है। चौधरी के अनुसार, भारत का प्राथमिक ध्यान अपने विकास पर केंद्रित है और वह किसी भी तरह का तनाव नहीं चाहता। उन्होंने तर्क दिया कि पड़ोसी देश से अच्छे संबंध और सीमा पर शांति भारत की तरक्की और विकास दर के लिए महत्वपूर्ण है, इसलिए भारत पाकिस्तान के साथ युद्ध जैसी स्थिति नहीं चाहेगा। पाकिस्तान में चरमपंथी हमलों के पीछे भारत का हाथ होने के इस्लामाबाद के आरोपों को शकील चौधरी ने सिरे

से खारिज किया। उन्होंने कहा कि भारत की सीमा न बलूचिस्तान से लगती है और न ही खैबर पख्तूनख्वा से, इसके बाद वहां भारत का हस्तक्षेप करना अत्यंत कठिन है। चौधरी ने पाकिस्तानी सैन्य जनरलों के पुराने बयानों की याद दिलाई, जिसमें 2016 में राहील शरीफ ने आतंकवाद के खतमे का दावा किया था, लेकिन परिणाम कुछ और ही रहा। उन्होंने चुनौती दी कि यदि पाकिस्तान के पास भारत के खिलाफ कोई सबूत है, तब उस सबूत को संयुक्त राष्ट्र में पेश करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान की विश्वसनीयता पर शकील चौधरी ने गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने हाल ही में जापान के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा का जिक्र किया, जिसके दौरान जारी संयुक्त बयान में खुले तौर पर पाकिस्तान का नाम लेकर आलोचना की गई। चौधरी ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में एक बड़ा और दुर्लभ घटनाक्रम बताया, क्योंकि देशों द्वारा नाम लेकर आलोचना सामान्यतः नहीं की जाती। उन्होंने 2010 में ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री डेविड कैमरून द्वारा भी पाकिस्तान की आलोचना का उदाहरण देकर कहा कि वैश्वक समुदाय पाकिस्तान पर भरोसा नहीं करता।